प्रातः क्लास 9-12-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठरूहानी बच्चों को समझाते हैं। एक तो तुम बच्चों को बाप से ज्ञान का वरसा मिल रहा है। बाप से भी गुण उठाना है। और इन चित्र(ल0ना0) से भी गुण उठाना है। बाप को कहा जाता है शान्ति का सागर। तो शांति भी धारण करनी चाहिए। शांति के लिये ही बाप समझाते हैं। एक दो से शांति से बोलो। यह भी गुण उठाया जाता है। ज्ञान का तो गुण उठा ही रहे हो। यहनालेज पढ़नी है जैसे और पढ़ाई होती है। सिर्फ यह विचित्र बाप पढ़ाते हैं। विचित्र(आत्मायें) बच्चे पढ़ते हैं। यह है यहां की नई खुबी। जिसको और कोई नहीं जानते। कृष्ण जैसे देवी गुण भी धारण करनी है। बाप ने समझाया है मैं शांति का भी सागर हूं। तो शांति यहां स्थापन करनी है। अशांति खत्म होनी है। अपनी चलन को देखना चाहिए कहां तक हम शांत में रहते हैं। बहुत पुरुष लोग होते हैं जो शांति पसन्द करते हैं। समझते हैं शांत रहना अच्छा है। शांति का गुण भी बहुत भारी है। परन्तु शांति कैसे स्थापन होगी, शांति का अर्थ क्या है यह भारतवासी बच्चे नहीं जानते। बाप तो भारतवासियों के ही कहेंगे। बाप आते भी हैं भारत में। अभी तुम समझते होवरोवर अन्दर में भीशांति जरूर होनी चाहिए। ऐसे नहीं कोई अशांति करे तो खुद को भी अशान्त करना है। नहीं। अशान्त होना यह भी अवगुण है। अवगुण को निकालना है। हरेक से गुण ग्रहण करना है। अवगुण तरफ देखना भी न चाहिए। क्योंकि बाप दादा दोनो शांत रहते हैं। कब बिगड़ते नहीं। रड़ी नहीं मारते। यह भी सीखा है ना। जितना शांत में रहे उतना ही अच्छा है। शान्त से ही याद कर सकते हैं। अशांत वाले याद कर न सके। हरेक से गुण तो ग्रहण करना ही है। दत्तात्रेय आदि का मिसाल भी देते हैं ना। देवताओं जैसे गुणवान तो कोई होते ही नहीं। एक ही विकार मूल है उन पर तुम विजय पा रहे हो। पाते रहते हो। कर्मेन्द्रियों पर भी विजय पानी है। अवगुणों को छोड़ देना है। देखना भी न है। बोलना भी न है। जिन में अवगुण है उनके पास भी नहीं जाना चाहिए। रहना भी बहुत मीठा शांत है। थोड़ा ही बोलने से तुम सभी कार्य कर सकते हो। सभी से गुण ग्रहण कर गुणवान बनना है। समझु सयाने जो होते हैं वह शांत रहना पसन्द करते हैं। कई भक्त लोग ज्ञानियों से भी शांत निर्भाण चित होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। यह जिस लौकिक बाप का बच्चा था वह टीचर था। बहुत निर्भाण शांत रहता था। क्रोध कब होतानहीं था। जैसे साधु लोग होते हैं तो उनकी महिमा की जाती है। भगवान से मिलने लिये पुरुषार्थ करते रहते हैं। काशी में हरिद्वार में जाकर रहते है। बच्चों को बहुत ही शांत मीठा रहना चाहिए। यहां कोई अशान्त रहते हैं तो शांति के निमित्त नहीं बन सकते। अशांत वाले से बात भी नहीं करना चाहिए। दूर रहना चाहिए। फर्क है ना। वह बगुल और वह हंस। हंस सारा दिन मोती चुगते रहते हैं। उठते-बैठते चलते अपने ज्ञान को सुमिरण करते मोती चुगते रहते हैं। सारा दिन बुद्धि में यही रहना है किसको कैसे समझावें। बाप का परिचय कैसे देवें। बाबा ने समझाया है जो भी बच्चे आते हैं उनसे फार्म भरायजाता है। सभी सेन्टर्स पर जब कोई कोर्स लेने चाहते हैं तो उनसे फार्म भराना है। कोर्स नहीं लेता है तो फार्म भराने की दरकार नहीं। फार्म भराया ही इसलिये जाता है कि मालूम पड़े कि इनमें क्या2 है। क्या समझाना है। क्योंकि दुनिया में तो इन बातों को कोई समझते नहीं हैं। इनको सारा मालूम पड़ता है फार्म से। बाप से कोई मिलते हैं तो भी फार्म भराना होता है। तो मालूम पड़े तो क्यों मिलते हैं। बाकी तो समझते ही नहीं उनसे फार्म भराने की दरकार नहीं। कोई भी आते हैं उनको हद की और बेहद के बाप का परिचय देना है। क्योंकि तुमको बेहद के बाप ने ही आकर परिचय दिया है। तो तुम फिर औरों को परिचय देते हो। उनका नाम है शिव बाबा। शिव परमात्माय नमः कहते हैं ना। वह उनको देवतायें नमः कहेंगे। इनको कहेंगे शिव परमात्माय नमः। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। मुक्ति जीवनमुक्ति का वरसा पाने लिये पवित्र अवश्य तो जरूर बनना है। वह है ही पवित्र दुनिया। जिसको सतो0दुनिया कहा जाता है। वहां जाना है तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जावेंगे। यह तो बहुत ही सहज है। कोई से भी फार्म भराये तुम कोर्स देते हो। एक दिन फार्म

भराओ फिर समझाओ। फिर फर्म भराओ तो मालूम पड़ेगा। हमने इनको जो समझाया वह याद रहा वा नहीं। तुम देखेंगे दो दिन के फर्म में फर्क जरूर होगा। झट तुमको मालूम पड़ जावेगा क्या समझा है। हमारे समझाने पर विचार किया है वा नहीं। फर्म भरने में फर्क पड़ता जावेगा। यह फर्म तो सभी के पास होनी चाहिए। बाबा के ख्याल में तो बहुत सेन्टर्स पर बच्चे हैं जो फार्म नहीं भराते हैं। बाबा मुरली में डायरेक्शन देते हैं तो बड़े2 सेन्टर्स को तो झट एक्ट में लानी चाहिए। फर्म रखना चाहिए। नहीं तो मालूम कैसे पड़े। खुद भी फील करेंगे कल क्या लिखा था आज क्या लिखता हूं। फर्म तो बहुत जरूरी है। फार्म मंगा सकते हैं। अलग2 छपावे तो भी हर्जा नहीं है। या तो एक ही जगह छपाये सभी जगह भेज देवें। छपाई के लिये तो हैड है दिल्ली। क्योंकि यह है दूसरों का कल्याण करना। देवी देवता बनाना। देवी देवता अक्षर बहुत ही ऊंच है। देवीगुण धारण करने वाले को देवता कहा जाता है। अभी तुम देवीगुण धारण कर रहे हो। तो जहां प्रदर्शनी वा म्युजियम आदि होती है तो वहां तो यह फर्म आदि बहुत होनी चाहिए। तो मालूम पड़े कैसी अवस्था है। समझकर फिर समझाना पड़ता है। बच्चों को कल्याण तो बहुतों को करना ही है। तो सदैव गुण ही वर्णन करनी है। अवगुण नहीं। तुम गुणवान बनते हो ना। जिनमें गुण होंगे वह दूसरों में भी गुण फूंक सकेंगे। अवगुण वाले कब गुण फूंक न सके। बच्चे जानते हैं समय कोई बहुत नहीं रहा है। पुरुषार्थ बहुत करना है। बाप ने समझाया है तुम रोज मुसाफिरी करते रहते हो। यात्रा करते रहते हो। यह जो गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह पिछाड़ी की बात है। अभी तो नम्बरवार हैं। कोई तो अन्दर में खुशी की उछलें मारते रहते हैं। ओ हो! परमपिता परमात्मा हमको मिला है। उन से हम वरसा लेते हैं। उनके पास कोई कम्पलेन हो न सके। कोई ने कुछ कहा तो भी सुना अनसुना कर अपनी मस्ती में मस्त रहना चाहिए। कोई भी बिमारी आदि हो तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब किताब अभी ही चुकुत करना है। फिर तो तुम 21 जन्म फूल बनते हो। वहां दुःख की बात ही नहीं। गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। फिर सुस्ती आदि भी उड़ जाती है। इसमें तो यह है सच्ची खुशी। वह है झूठी। धन मिला, जेवर मिला तो खुशी होगी। यह है बेहद की बात। तुमको तो अथाह खुशी में रहना चाहिए। जानते हो हम 21 जन्मों लिये सदा सुखी रहेंगे। इसी स्मृति में रहो। हम क्या बनते हैं। बाबा कहने से ही सभी दुःख दूर हो जाना चाहिए। यह तो 21 जन्मों के लिये खुशी है। अभी बाकी थोड़े दिन हैं। हम जाते हैं अपने सुखधाम। फिर और कुछ भी याद न रहे। यह बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं। कितने समाचार आते हैं। खिट2 चलती है। कब आर्य समाजियों की, कब सन्यासियों की। बाबा को कोई बात का दुःख थोड़ेही होता है। सुना, अच्छा यह भावी। यह तो कुछ भी नहीं है। हम तो कल्प के खजाने वाले बनते हैं। अपने से बात करने से भी खुशी हो जाती है। बड़ा शांत में रहते हैं। बाप की याद में भी रहते हैं। भल कुछ भी हो जाता है, ख्याल नहीं होता। हम तो अपने पुरुषार्थ में लगे रहते हैं। उनका चेहरा भी खुशी से खिला रहेगा। स्कालरशिप आदि मिलती है तो चहेरा कितना हर्षित रहता है। तुम भी पुरुषार्थ कर रहे हो इन ल0ना0 जैसा हर्षित रहने लिये। इन में ज्ञान तो है नहीं। तुमको तो ज्ञान भी है तो खुशी रहनी चाहिए। हर्षित भी होना चाहिए। इन देवताओं से तुम बहुत ऊंच हो। ज्ञान सागर बाप हमको कितना ऊंच ज्ञान देते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्नों की लाटरी मिल रही है। तो कितना खुशी रहनी चाहिए। यह जन्म तुम्हारा हीरे जैसा गया जाता है। नालेजफुल बाप को ही कहा जाता है। इन देवताओं को नहीं कहा जाता। तुम ब्राह्मण नालेजफुल हो। तो तुमको नालेज की खुशी रहती है। एक तो बाप मिलने की भी खुशी रहती है। सिवाय तुम्हारे किसको खुशी हो न सके। इन सन्यासियों आदि को अपना कितना नशा है। आगे चल यह सभी फील करेंगे। एक तो उन्हों को शास्त्र आदि पढ़ने की अधिकार ही नहीं। यह तो भक्तिमार्ग है। दुश्मन और दोस्त होते हैं ना। भक्ति है दुश्मन। भक्ति से दुःखधाम बन जाता है। तीर्थों आदि पर भक्तिमार्ग का कितना प्रस्ताव है। यह तो दुःखधाम है ना। भक्ति मार्ग से कोई सुख नहीं मिलता। भक्ति मार्ग का है आर्टीफिसीयल अल्प काल का सुख। उनका तो नाम ही है स्वर्ग। सुखधाम है विन। वहां अपारसुख, यहां अपार दुःख –

ई-12-52

है। अभी बच्चों को मालूम पड़ता है रावणराज्य में हम कितना छीछी बने हैं। आस्ते2 नीचे उतरते आये हैं। यह है ही विषय सागर। अभी बाप आ इस विष के सागर से निकाल तुमको क्षीर सागर में ले जाते हैं। बच्चों को यहां बहुत मीठा लगता है। फिर भूल जाने से क्या अवस्था हो जाती है। बाप कितना खुशी का पारा चढ़ाते हैं। इस ज्ञान अमृत का ही गायन है। ज्ञान अमृत का गिलास पीते रहना है। यहां तुमको बहुत अच्छा नशा चढ़ता है। फिर बाहर जाने से वह नशा कम हो जाता है। बाबा खुद फील करते हैं। यहां फीलिंग बच्चों को आती है। हम अपने घर जाते हैं। हम बाबा के मत पर राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम बड़े बारिस्टर हैं। यह सभी बुधि में नालेज है जिससे तुम इतना ऊंच पद पाते हो। पढ़ाते देखो कौन हैं। बेहद का बाप एकदम बदला देते हैं। तो बच्चों के दिल में कितनी खुशी होनी चाहिए। यह भी दिल में आना है औरों को भी खुशी देवें। रावण का है सराप। और बाप का मिलता है वरसा। रावण की सराप से तुम कितना दुःखी अशांत बने हो। बहुत गोप भी हैं जिनके दिल में होती है सर्विस करने परन्तु कलश माताओं को मिलता है। शक्ति-दल है ना। बन्देमातरम् गाया हुआ है। साथ में बन्देपितरम् तो हैं ही। परन्तु नाम माताओं का है। पहले ल० फिर ना०। पहले सीता पीछे राम। यहां पहले मेल का नाम फिर फिमेल का नाम लिखते हैं। यह भी खेल है ना। बाप समझाते तो सभी कुछ हैं। भक्ति मार्ग का राज भी समझाते हैं। भक्ति में क्या2 होता है। जब तक ज्ञान नहीं है तो पता थोड़ेही पड़ता है। अभी तुम समझते हो पहले हम तो जैसे अनपढ़े जट थे। गन्द में पड़े थे। अभी कैरेक्टर्स सभी का सुधरता है। तुम्हारा देवी कैरेक्टर्स बन रहा है। 5 विकारों से आसुरी कैरेक्टर्स होते हैं। कितनी चेंज होती है। तो चेंज में आना चाहिए ना। शरीर छूट जाय तो फिर थोड़ेही चेंज हो सकेगी। बाप में ताकत है कितनी चेंज में लाते हैं। अनुभव में सुनाते हैं हम बहुत काली शराबी कबाबी थे। इधर में बहुत चेंज हुई है। हम बहुत खुशी रहते हैं। प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। बाप समझाते तो बहुत हैं। परन्तु यह सभी बातें भूल जाते हैं। नहीं तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। हम बहुतों का कल्याण करें। मनुष्य बहुत दुःखी हैं। उनको रास्ता बतावें। समझाने लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है। गाली भी खानी पड़ती है। पहले से ही आवाज है यह सभी भाई बहन बनाते हैं। और भाई बहन का सम्बन्ध तो अच्छा है ना। तुम आत्मायें तो भाई2 हो। परन्तु फिर भी जन्म जन्मान्तर की दृष्टि जो पक्की हुई वह टूटती नहीं है। बाबा के पास तो बहुत पत्र आते हैं। लिखती हैं, बाबा हमारे ऊपर बाप की कुदृष्टि रहती है। अभी हम इन से कैसे छूटें। बहुत दुःख होता है। बाबा बचाओ। हमको भाई खराब करते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारी ना पति के लिये। यहां तो भाई बाप मामा चाचा काका सभी दुशासन बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं। कल्प2 हम यही बातें सुनते हैं। तो बाप समझाते हैं इस छीछी दुनिया से तुम बच्चों को ही जाना है। गुल2 बनना है। कितने ज्ञान सुनकर फिर भूल जाते हैं। सारा ज्ञान उड़ जाता है। काम महाशत्रु है ना। काम की आश पूरी न होने से फिर क्रोध में आ जाते हैं। कोई2 तो खुद जाकर पुलिस में रिपोर्ट करते हैं हमको ऐसे मारते हैं। इसमें महावीरणी चाहिए। कुछ सटका भी खानी पड़ती है। 21 जन्म सुख पाने लिये एक जन्म सटका खाया तो कोई हर्जा थोड़ेही है। भेड़ बकरियां मार खाती हैं। कोई तो फिर छीछी भी होती रहती है। ताकत नहीं। कहां बाहर निकल न सके। बाबा तो बहुत अनुभवी है। इस विकार के पीछे राजाओं ने अपनी राजाई गंवाई है। (मिसाल बताना) काम बहुत खराब है। सभी कहते हैं बाबा यह बहुत कड़ा दुश्मन है। बाप कहते हैं काम को जीतने से ही तुम विश्व के मालिक बनेंगे। परन्तु काम विकार ऐसा करा है जो प्रतिज्ञा कर के भी फिर गिर पड़ते हैं। बहुत मुश्किल से कोई सुधरते हैं। इस समय सारी दुनिया के कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। पावन दुनिया कब थी कैसे बनी किसको भी पता नहीं है। इन्होंने यह राज भाग कैसे पाया। कब कोई बता न सके। आगे समय ऐसा आयेगा तुम लोग विलायत आदि में भी जावेंगे। वह भी सुनेंगे तो सही ना। पैराडाईज कैसे स्थापन होता है। यह पैराडाईज कब था। कोई को पता नहीं है। आगे तुम भी नहीं समझते थे कि यह स्वर्ग था। हम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तुमको कितना मालूम पड़ गया है। तुम्हारी बुधि में है यह

सभी बातें अच्छी रीत है। तो अभी तुम्हारी यही लात-और तात रहनी चाहिए। और सभी बातें भूल जानी है। बाप दादा बैठे हैं। कोई भी बात में नाराज़ न होना है। बाप के पास आना चाहिए। बाप सभी दुःख दूर करने वाला बैठा है। तुम्हारे तो सभी दुःख दूर हो जाते हैं। तुम जानते हो हम ट्रान्सफर हो रहे हैं अपने सुखधाम में। इसकी बहुत खुशी रहती है। लाटरी तुमको बहुत फर्स्ट क्लास मिलती है। तुमको अपनी सम्भाल आपेही करनी है। अपना सुधारा करना है। तुम्हारी है ही योगबल की बात। बाप ही आकर योगबल सिखलाते हैं। तुम योगबल से विश्व के मालिक बन सकते हो। वहलोग आपस में लड़ते हैं, कितने एक दो को ताकत दिखाते हैं। समझते हैं हम जीतेंगे। सभी आपस में लड़ेंगे तो जरूर। दिन प्रति दिन जोर होता जाता है समझते हैं बस अभी लड़ाई लगी कि लगी। उनके अन्दर में होगा मैं जीतुंगा। मैं पावर फुल हूं। क्रिश्चन ही अपास में हैं। उन्हों में ताकत बहुत हैं। क्रिश्चन्स के पास ही बम्स आदि हैं। इस पर बहुत खर्चा होता है। उन्हों के पास तो ढेर हैं। कहानियां भी हैं दो आपस में लड़े और मक्खन बीच में तीसरा खा गया। कृष्ण के मुख में चन्द्रमा दिखाते हैं। बाप कहते हैं यह सारी सृष्टि की राजाई उनके मुख में है। राजधानी है ना बड़ी। विचार करो कल्प2 हम राजधानी पाते हैं। बच्चों को बड़ी खुशी अन्दर में रहनी चाहिए। बाप की सर्विस करनी है। ड्रामा हमको जरूर करावेगी। मुख में सारे विश्व की बादशाही का मक्खन है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम विश्व के मालिक बनते हैं। बाबा जरूर हमको बनावेंगे। अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो। नम्बरवार नशा रहता है। अभी तुम हो संगम युग पर। तुम्हारा मुंह उस तरफ है। श्मशान के दर पर जब जाते हो तो फिर मुंह फिराये उस तरफ करते हैं। लात इस तरफ करते हैं। अभी तुम सभी वानप्रस्त में जाने वाले हो। फिर नये घर में जाना है। शांतिधाम सुखधाम को तुम ही जानते हो। तो तुम बच्चों को बहुत ही खुशी में रहना चाहिए। नशा रहना चाहिए नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर उतरता जाता है। यह नशा और कोई नहीं है। यह है सुखधाम जाने का नशा। तुम जानते हो भारत कल क्या था। आज क्या है। हम ही सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बने यह खेल है। अभी तुम चले अपने वतन की ओर। शान्तिधाम सुखधाम तुम्हारा वतन है। यहां तुम पराये राज्य में हो। अभी अपना राज्य मिलता है तो उसको ले लेना चाहिए। रोज तुमको प्याला मिलता है तो बच्चों को खुशी का पारा चढ़े। परन्तु ऐसे नहीं कि यहां नशा चढ़े और बाहर निकलने से ही खत्म हो जाये। एक दिन आवेंगे जो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। निरवा मौत ... निरवा तो जानवर निसल ही बैठेंगे। तुमको ज्ञान है। हम आत्माएं भी शरीर छोड़कर जाते हैं अपने घर। फिर लौटेंगे तब तक सभी ठीक ठाक हो जावेगा। बच्चों को सदैव खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम अभी जाते हैं सुखधाम। फिर दुःख बिमारी आदि की बात ही नहीं। छी छी अक्षर सुनने की बात नहीं रहेगी। अच्छा।

यह है सत्य नर से ना0 बनने की कथा। जिसको सत्य अमरकथा भी कहते हैं। तीजरी की कथा भी कहते हैं। इन नैत्रों से तो सब देखो परन्तु तीसरे ज्ञान की नेत्र से अपने शान्तिधाम सुखधाम को याद करते रहो। ऐसे कब कोई सिखला नहीं सकता। बाप ही आकर कहते हैं बाप को याद करो और वर्से को याद करो। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। बाकी इन आंखों से जो कुछ देखते हो उनको भूल जाओ। बाप नया घर बनाते हैं तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना। यह भी ऐसे है। अभी बाकी थोड़ा समय है। इसलिये अपने शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। सिखलाने वाले बाप को याद करो तो वहां पहुंच जावेंगे। फिर जितना जो याद करेंगे। इस पुरानी दुनिया में पराया राज्य में तो बाकी थोड़ा समय है। यह कोई अपना राज्य थोड़ेही है। यह तो पराया राज्य है। रावण का सारी दुनिया पर राज्य है ना। सिर्फ लंका में नहीं। सारी दुनिया में रावण राज्य है। इसको बेहद का फारेन राज्य कहा जाता है। एक एक मनुष्य में इन 5 भूतों की प्रवेशता है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

:-शिव बाबा याद है:-